अब्दुल बिस्मिल्लाह

अजगर का पेट

H
028.5 Ab 84 G
Ab 32A

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

Ajgar ka Pet

अजगर का पेट

Abdul Bismillah

अब्दुल बिस्मिल्लाह

Ishan Prakashan, Noida

ईशान प्रकाशन
नौएडा (उ. प्र.)

CATALOGUED

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Ab 32 A
00078452

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 78452
Date 22.3.92
SIMLA.

H
028.5
Ab 32 A

मूल्य : रु. 15.00

© अब्दुल बिस्मिल्लाह ● **प्रथम संस्करण** : 1989

ईशान पकाशन, सी-3, सैक्टर-15, नौएडा (उ. प्र.) द्वारा प्रकाशित और सुदर्शन ऑफसेट
नवीन शहादरा, दिल्ली-110 032 द्वारा मुद्रित। **चित्रकार** : चंचल

अजगर का पेट

गाँव का नाम था बिजौरा और उस लड़के का नाम था लालजी। लालजी पढ़ने में बहुत कमजोर था। इसीलिए वह स्कूल जाने से हमेशा जी चुराया करता था। पढ़ने के बदले जंगल जाकर लकड़ियाँ या घास काटने में उसे ज्यादा आनंद आता था।

बिजौरा गाँव के लोग गरीब थे। उनके पास इतने पैसे कभी नहीं होते थे कि बाजार से वे नकद दामों में सौदा खरीद सकें। अतः गाँव के हर घर का संबंध बाजार के किसी न किसी साहूकार से जुड़ा हुआ था। गाँव के लोग खेती करते थे, लेकिन पहाड़ी-पथरीली जमीन में इतना अन्न कभी पैदा नहीं होता था कि वे अपना भी पेट भर सकें और साहूकार का भी। जबकि साहूकार का पेट तो उनके पेट से भी बड़ा होता था।

लालजी का पिता जिस साहूकार के यहाँ से उधारी लाता था, उसका पेट तो और भी बड़ा था। उस लंबी तोंदवाले साहूकार को देखकर लालजी को अक्सर ही गुस्सा आ जाया करता था, क्योंकि वह अक्सर उसके पिता को परेशान किया करता था और कभी-कभी तो भद्दी-भद्दी गालियाँ भी देता था।

लालजी का मन शायद इसीलिए पढ़ने में नहीं लगता था। जाहिर है कि उसकी पढ़ाई के कारण उसके पिता को कुछ ज्यादा ही परेशान होना पड़ता था और साहूकार की कुछ ज्यादा ही गालियाँ सुननी पड़ती थीं। लालजी को ये बहुत बुरा लगता था। उसके पिता को कोई फटकारे, यह उसे बर्दाश्त नहीं था। शायद इसीलिए वह जंगल में जाकर मेहनत करना पढ़ने के बजाय ज्यादा जरूरी समझता था।

एक बार साहूकार ने जब उसके बाप से कहा था कि अपने लड़के की पढ़ाई पर ध्यान क्यों नहीं देते, तो उसकी इच्छा हुई थी कि साहूकार के पेट को फाड़ डाले और कहे कि मेरा पिता पहले तुम्हारा कर्ज तो चुका ले, फिर मुझे पढ़ाएगा। लेकिन वह टुकुर-टुकुर सिर्फ़ देखता रहा था।

लालजी दरअसल काम करना चाहता था। वह सुबह-सुबह उठता और माता-पिता की नज़र बचाकर जंगल की ओर भाग जाता। दोपहर को वहाँ से लौटता तो उसके नन्हें-से कंधों पर घास या लकड़ियों का गट्ठर लदा होता, जिसे देखकर ही घरवालों की जबान बंद हो जाती। उसका पिता गट्ठर उठाकर बाज़ार जाता और साहूकार के यहाँ औने-पौने दामों में उसे बेचकर देर रात गए घर लौटता।

दूसरे दिन लालजी फिर दूने उत्साह से जंगल की ओर निकल जाता।

एक दिन की बात है कि लालजी घास की खोज में काफ़ी दूर तक निकल गया। दरअसल उस दिन वह छप्पर पर छाने के लिए घास काटने गया हुआ था। बारिश के दिन करीब आ गए थे और गाँव के लोगों ने अपने-अपने छप्परों के लिए घास-पत्ते इकट्ठे करने आरंभ कर दिए थे।

चलते-चलते लालजी एक ऐसे घने वन में पहुँच गया, जहाँ चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ राक्षसों के समान खड़े थे और आसपास लंबी-लंबी घास उगी हुई थी। इतनी लंबी घास कि उसका पूरा शरीर ही छिपा जा रहा था। एक क्षण के लिए उसके मन में थोड़ा-सा डर पैदा हुआ, लेकिन अगले ही पल अपनी कमर से हँसिया निकालकर वह घास काटने में जुट गया।

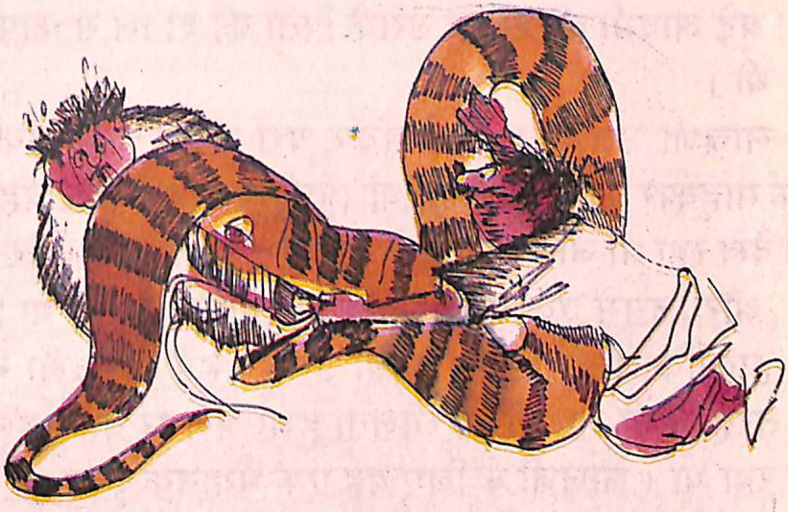

अचानक उसे ऐसा लगा मानो कोई चीख रहा हो ! वह खड़ा हो गया। कटी हुई घास को उसने समेटकर रख दिया और अनुमान लगाने लगा कि वह आवाज़ कैसी है और किधर से आ रही है। आवाज़ बेहद खौफनाक और दर्द से भरी थी। उसका नन्हा-सा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

लेकिन वह हिम्मत करके वहाँ से चल पड़ा। जिधर से चीखने की आवाज़ आ रही थी, लालजी उसी ओर बढ़ा जा रहा था। हठात् वह रुक गया। उसे ऐसा लगा जैसे सामने कोई लेटा हुआ है और उसके भारी-भरकम पेट में कुछ समाया जा रहा है।

लालजी थोड़ा और आगे बढ़ा। फिर सामने जो दृश्य उसे दिखाई पड़ा वह सन्न कर देनेवाला था। एक झाड़ी की छाया में एक बूढ़ा आदमी पड़ा हुआ था और एक अजगर उसे लील रहा

था ! बूढ़े आदमी की शक्ल उसके पिता की शक्ल से काफ़ी मिल रही थी।

लालजी उस दृश्य को देखकर थर्रा उठा। अभी तक उसने सिर्फ़ साहूकार का ही पेट देखा था। एक अजगर का पेट वह पहली बार देख रहा था जो साहूकार के पेट की तरह ही भूखा और खूँखार था··· और जिसमें एक समूचा आदमी समाया जा रहा था!

हालाँकि जंगल में अजगर तो उसने बहुत बार देखा था, पर इस तरह किसी आदमी को लीलता हुआ अजगर वह पहली बार देख रहा था। लालजी के लिए वह एक भयानक दृश्य था। बूढ़ा छटपटा रहा था और अजगर अपने पेट में उसे भरे ले रहा था।

अचानक लालजी को याद आया कि शिकार करते हुए अजगर का शरीर बेकार हो जाता है। उसमें आक्रमण करने की शक्ति नहीं रह जाती।

वह हिम्मत करके आगे बढ़ा और एकदम अजगर के पास जाकर खड़ा हो गया। उसे लगा कि बूढ़े की कमर के पास से अजगर उसे देख रहा है। लेकिन उसकी आँखों की ओर से ध्यान हटाकर लालजी ने अपना हँसिया उसके जबड़ों में फँसा दिया···

कर्र-कर्र··· जंगल में यह ध्वनि काफी देर तक गूँजती रही। तब तक, जब तक कि उस अजगर के पेट से एक बूढ़ा आदमी आजाद नहीं हो गया।

अपनी कमजोरी

दशहरे की छुट्टियों के बाद जब सुनील और रेखा स्कूल पहुँचे तो वहाँ उन्होंने एक नए गुरु जी को देखा। पता चला कि पुराने गुरु जी की बदली हो गई है और अब यही गुरु जी उन्हें पढ़ाएँगे।

वह एक छोटा-सा गाँव था और वहाँ वही एक स्कूल था। गुरु जी भी वहाँ एक ही थे। लड़के-लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ते थे और उनकी संख्या बहुत कम होती थी।

स्कूल गाँव से बिल्कुल बाहर था और उसके पास ही गुरु जी के रहने के लिए एक कच्चा मकान बना था। पुराने गुरु जी वहीं रहते थे और नए गुरु जी ने भी वहीं अपना डेरा जमा लिया था। वह मकान गाँववालों ने ही बनवा दिया था।

गाँव का बाहरी इलाका होने के कारण वह स्थान वैसे भी बहुत रमणीय था। पर आसपास बिखरे छोटे-से जंगल ने उसे और भी सुहाना बना दिया था।

सुनील और रेखा पड़ोसी थे और दोनों में गहरा लगाव था। वे साथ ही स्कूल जाते और साथ ही वापस आते थे। लेकिन नए गुरु जी को लेकर दोनों के मन में दो तरह की बातें पैदा हुईं। सुनील को

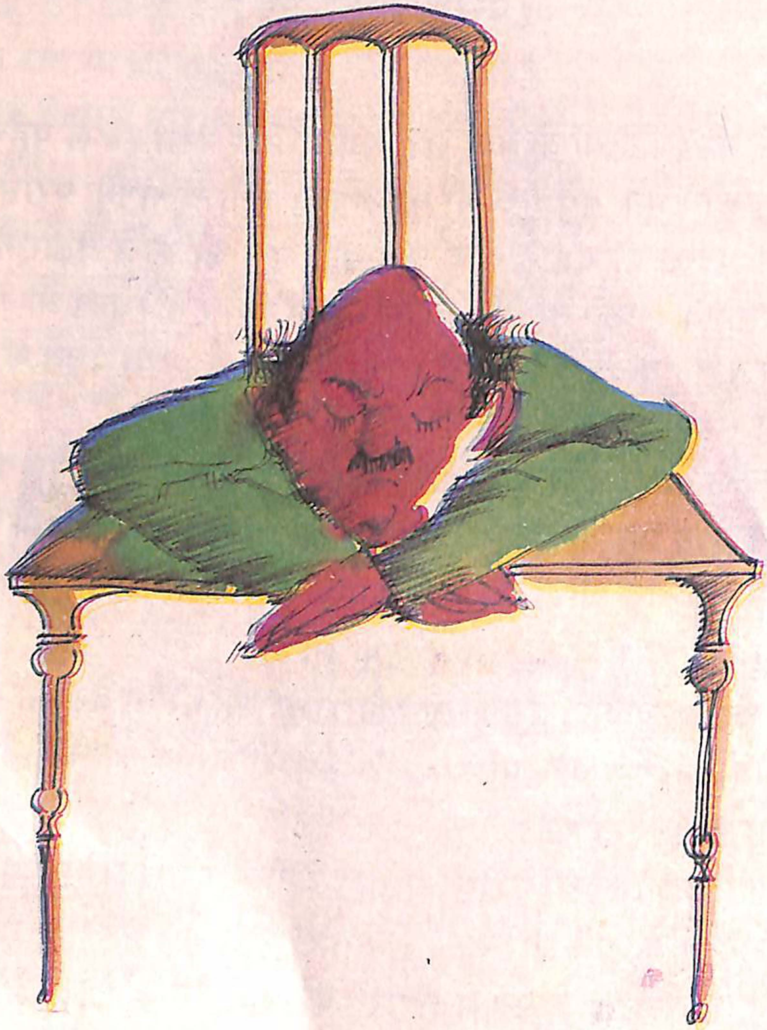

नए गुरु जी अच्छे नहीं लगे, पर रेखा को वे बहुत अच्छे लगे। इसका कारण यही था कि रेखा पढ़ने में तेज थी और सुनील कमजोर था। नए गुरु जी की आदत थी कि वे छात्रों को एक बार अच्छी तरह सवाल समझा देते थे, फिर उसी तरह के अन्य सवाल बोल देते थे। उसके बाद वे मेज पर सिर रखकर पता नहीं क्या सोचते रहते थे। जब कोई लड़का उन्हें सवाल दिखाने जाता तो उनका ध्यान टूटता। फिर जिसका सवाल गलत होता उसे बेतहाशा पीटने लगते। सुनील भी अक्सर मार खाया करता।

एक दिन सुनील ने अपने दोस्तों से सलाह की कि गुरु जी को कुछ मजा चखाना चाहिए।

अगले दिन सुबह-सुबह स्कूल पहुँचकर उन्होंने नदी से एक मेंढक पकड़कर मेज की दराज में बंद कर दिया। गुरु जी आते ही दराज खोलकर अपना रूल निकालते थे। उस दिन जैसे ही उन्होंने दराज खोला, मेंढक उछलकर उनके ऊपर आ गया। गुरु जी आग-बबूला हो गए।

"किसने की है यह हरकत ?" गुरु जी गरजे।

लेकिन सभी लड़के खामोश रहे। सुनील और उसके दोस्तों को बेहद हँसी आ रही थी, पर किसी तरह उन्होंने अपने को जबरन रोके रखा।

तब गुरु जी ने एक ओर से पिटाई शुरू कर दी। सुनील ने भी चुपचाप मार खा ली। पर शाम को अपने दोस्तों से उसने फिर सलाह की।

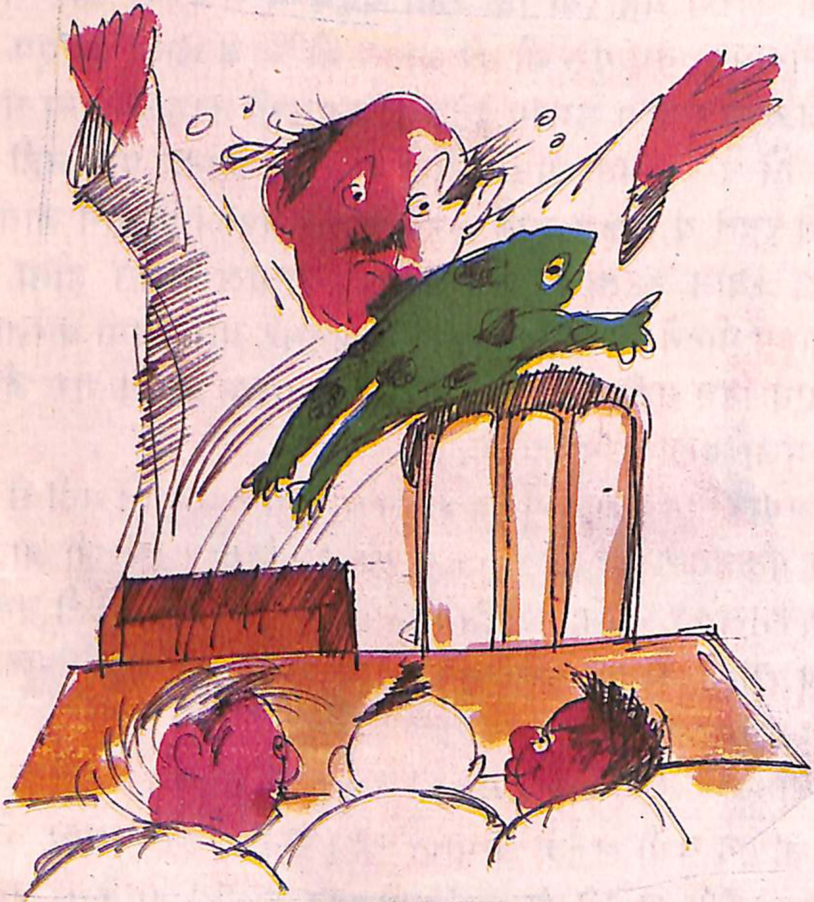

''अब गुरु जी को ऐसा मजा चखाना चाहिए कि उन्हें भी कुछ चोट लगे। तब वे समझेंगे कि चोट लगने पर कैसे दर्द होता है!''

सुनील ने नेता-पद से बोलते हुए कहा तो सभी अपनी-अपनी राय देने लगे।

''क्यों न पीछे से गुरु जी की कुर्सी खींच ली जाए?'' भोला ने कहा तो सब हँस पड़े।

''ऐसा किया जाए कि एक दिन उनका रूल पकड़ लिया जाए और जब वे ज़ोर से खींचें तो छोड़ दिया जाए। इससे वे गिर पड़ेंगे!'' अहमद ने सुझाव दिया।

''एक काम और हो सकता है। उनकी कुर्सी पर बैठने की जगह कील ठोंक दी जाए!'' विनोद ने अपनी राय दी।

लेकिन सुनील को किसी की राय नहीं जँची। इन सभी कामों में खतरा था। अतः निर्णय दूसरे दिन के लिए टल गया।

अगले दिन सुनील सुबह-सुबह स्कूल पहुँचा। स्कूल और गुरु जी के मकान के बीच में जो पगडंडी थी, उसके दोनों ओर लंबी-लंबी घास उगी हुई थी। सुनील ने कई जगह दोनों ओर की घास को आपस में कसकर बाँध दिया। यह काम इस प्रकार किया सुनील ने कि घनी घास में बँधी हुई घास न दिखाई पड़े।

और दस बजे गुरु जी जब स्कूल आए तो वे गुस्से से खौल रहे थे। रास्ते में बँधी हुई घास में फँसकर वे गिर गए थे और उनके चेहरे पर जगह-जगह कंकड़ धँस गए थे। कपड़े भी उनके गंदे हो गए थे।

आते ही उन्होंने सभी लड़कों को खड़ा कर दिया, "किसने की है यह हरकत ?"

सभी लड़के खामोश रहे।

"मैं पूछता हूँ किसने की है यह हरक़त ? असली अपराधी को सामने ले आओ वरना सबकी पिटाई होगी !"

गुरु जी की मूँछें फड़क रही थीं और हाथ काँप रहे थे। लड़कों में हलचल-सी मच गई थी। सब लोग सुनील और उसके दोस्तों को देखने लगे। वे लोग शरारत करने में प्रसिद्ध थे। रेखा तो उनके सलाह-मशविरे से भी वाकिफ थी।

सहसा रेखा नें सिर नीचा करके सुनील का नाम बता दिया।

बस फिर क्या था, सुनील की मरम्मत शुरू हो गई, और मार चुकने के बाद गुरु जी ने उसे मुर्गा बनने का आदेश सुना दिया।

सुनील मुर्गा तो बन गया लेकिन जैसे ही गुरु जी पेशाब करने गए तो वह उठा और बस्ता लेकर भाग गया।

पिता जी के डर से वह घर नहीं गया। रास्ते में ही एक बरगद के नीचे बैठ गया।

बैठे-बैठे देर तक वह बरगद के पत्ते बीन-बीनकर खेलता रहा। फिर उसे नींद आ गई और वह वहीं बस्ता सिर के नीचे रखकर सो गया।

अचानक कुछ देर बाद किसी ने उसे झिझोड़कर जगा दिया। सामने रेखा बैठी थी। रेखा को देखते ही सुनील के बदन में आग लग गई। उसने उसकी चुटिया पकड़ी और बुरी तरह पीटना शुरू

कर दिया।

रेखा चुपचाप पिटती रही।

''बोल, क्यों बताया मेरा नाम ?'' पीटते-पीटते थक जाने के बाद सुनील गरजा।

''इसलिए कि तुम गुरु जी से शरारत करना छोड़ दो। तुम्हारा नाम न बताती, तो सब पीटे जाते और शरारत तो तुम्हारी ही थी। लेकिन गुरु जी को परेशान करके तुम कहाँ तक बचोगे मार खाने से ? पढ़ने में तुम कमज़ोर हो इसीलिए तो मार खाते हो। अपनी कमजोरी क्यों नहीं दूर करते ?''

सुनील खामोश रहा।

''अच्छा, मैं क्षमा माँगती हूँ।''

यह कहते-कहते रेखा की आँखों में आँसू आ गए। सुनील की आँखें भी डबडबा आई थीं। थोड़ी देर तक दोनों खामोश बैठे रहे, फिर सुनील खड़ा हो गया।

''तुम ठीक कहती हो रेखा, आदमी को पहले अपनी कमजोरी देखनी चाहिए। मैं अब मन लगाकर पढ़ूँगा और गुरु जी से कभी कोई शरारत नहीं करूँगा। चलो !''

रेखा के होंठों पर मुस्कान तैर गई।

मन का पाप

एक गाँव में गंगा नाम का एक गायक रहता था। उसका स्वर इतना मधुर था कि उस इलाके के दूर-दूर के गाँवों में वह प्रसिद्ध हो गया था। जहाँ भी कोई उत्सव होता, गंगा उसमें गाने के लिए अवश्य बुलाया जाता। दो दलों की प्रतियोगिता में वह हमेशा विजयी होता। इस प्रकार गंगा को लोकगीतों के उस्ताद का दर्जा प्राप्त हो गया था।

एक दिन गंगा पास के एक गाँव से गाना गाकर अपने घर वापस आ रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक लड़का अकेला बैठा हुआ है और बीच रास्ते में गड्ढा खोद रहा है। वह एक स्थान पर गड्ढा खोदता और उसे बंद कर देता, फिर दूसरे स्थान पर गड्ढा खोदता और उसे भी बंद कर देता। इस प्रकार वह अपने आगे-पीछे कई गड्ढे खोदकर उन्हें बंद कर चुका था। बालक के इस खिलवाड़ को देखकर गंगा को बड़ा मजा आया। वह लड़के के पास पहुँचकर खड़ा हो गया।

"क्यों भाई, क्या कर रहे हो ? क्या नाम है तुम्हारा ?" गंगा ने बालक से प्रश्न किया, तो वह चौंक उठा।

"खेल रहा हूँ। मेरा नाम बुद्धू है।" बालक ने सरलता से उत्तर दिया।

"अकेले-अकेले कौन-सा खेल खेल रहे हो भाई?"

"मैं पहले गड्ढा खोदता हूँ, फिर उसे बंद कर देता हूँ। इसके अलावा मुझे कोई खेल नहीं आता।"

"यह खेल तुमने कहाँ सीखा?"

"कहीं नहीं, मेरे पिता जी कहा करते थे, जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह खुद गड्ढे में गिरता है। इसलिए मैं गड्ढा खोदता हूँ और उसे बंद कर देता हूँ।"

"लेकिन तुम गड्ढा खोदते ही क्यों हो?"

"इसलिए कि मुझे समय काटना है और मैं कोई खेल नहीं जानता।"

गंगा को बड़ा आश्चर्य हुआ। छोटा-सा बालक और फर्राटे से बोल रहा है!

"तुम्हारे माता-पिता कहाँ रहते हैं?"

"पिता जी मर चुके हैं, माता जी इस गाँव के ठाकुर साहब के यहाँ काम करती हैं।"

"मुझे अपनी माँ से मिलाओगे?"

"क्यों नहीं, चलिए।"

बुद्धू खड़ा हो गया और गंगा को लेकर पास के गाँव की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर गंगा ने उसकी माँ से बुद्धू की खूब तारीफ की और यह कहकर उसे माँग लिया कि इसे मैं पढ़ा-लिखाकर

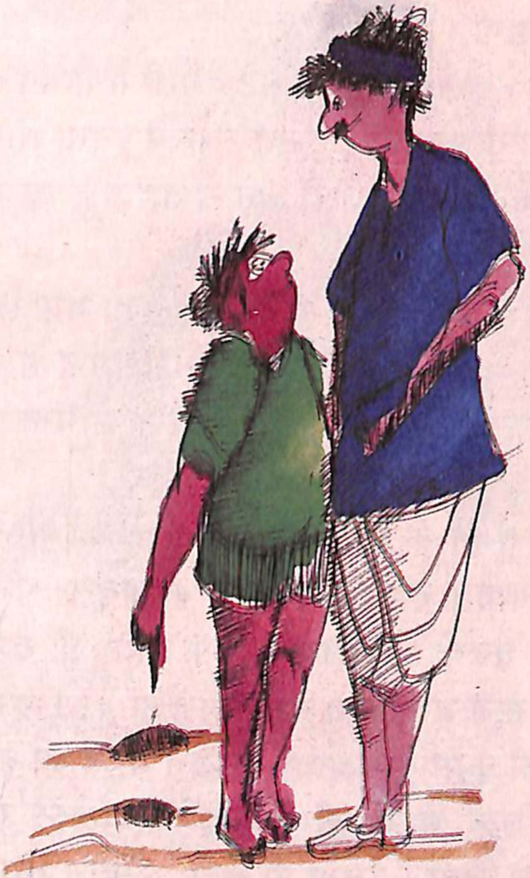

आदमी बना दूँगा। लड़का बड़ा होनहार है।

गंगा के घर में आकर बुद्धू बहुत खुश हुआ। वहाँ किसी चीज की कमी नहीं थी। घर में गंगा की पत्नी के अलावा उनका एक लड़का भी था—मोहन। उसके साथ बुद्धू की दोस्ती हो गई और वह ठाट से रहने लगा।

एक दिन गंगा ने देखा कि घर से सटे बगीचे में मोहन को सामने बैठाकर बुद्धू गाना गा रहा था। उसके स्वर में इतना आकर्षण था कि गंगा दंग रह गया। और उसी दिन से वह बुद्धू को बाकायदा गाना सिखाने लगा।

थोड़े ही दिनों में बुद्धू गायन में इतना दक्ष हो गया कि गंगा के साथ वह भी गाने जाने लगा। अब वे बारी-बारी से गाते और पहले से दोगुना इनाम लाते। बुद्धू की गायकी से गंगा फूला नहीं समाता था।

एक बार पास ही के एक कस्बे में गंगा को गाने के लिए आमंत्रित किया गया। वहाँ जन्माष्टमी के अवसर पर गाने की प्रतियोगिता हुआ करती थी, जिसे वहाँ के महंत जी कराते थे।

उस बार भी खूब जबरदस्त समारोह हुआ। दूर-दूर के गवैयों ने अपनी कला का कमाल दिखाया, लेकिन महंत जी को बुद्धू का गाना सबसे अधिक भाया और उन्होंने सर्वश्रेष्ठ गायक का पुरस्कार उसी को दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने गंगा से कहा, "गंगा भाई, तुम्हारे गाने की प्रशंसा तो मैंने बहुत सुनी थी, पर तुम्हारा लड़का तुमसे भी अच्छा गाता है। आगे चलकर यह महान

कलाकार बनेगा।"

महंत जी की बात गंगा के दिल में चुभ गई। वह सोचने लगा कि इस लड़के के कारण मेरा उचित सम्मान नहीं हो सका और भविष्य में यदि यह इसी प्रकार उन्नति करता चला गया, तो एक दिन यह मुझे भी पछाड़ देगा। इस विचार के आते ही गंगा का दिमाग तेजी से काम करने लगा। तब तक वह अपने गाँव पहुँच चुका था।

Acc. No. 78452
22.3.92

"बुद्धू, तुम चलो, मैं ज़रा अपने साथियों को बता दूँ कि हम इस प्रतियोगिता में भी जीत गए।" गंगा ने बुद्धू को अपना थैला देते हुए कहा और तेज़ी से दूसरी ओर चल पड़ा।

उस गाँव में हलवाई की एक ही दूकान थी। वहाँ एक भयानक व्यक्ति बैठता था। मिठाई बेचने के अलावा, वह रुपया लेकर लोगों की हत्या भी किया करता था। गंगा सीधे उसी के यहाँ पहुँचा।

"यह लो अपनी पेशगी। इस रूमाल को लेकर जो लड़का आए, उसका काम तमाम कर देना है।" गंगा ने हलवाई से कहा और घर आ गया। वहाँ उसने देखा कि बुद्धू उसकी पत्नी से महंत जी की उदारता का बखान कर रहा था।

"वाह भई बुद्धू वाह! तुमने तो कमाल कर दिया। सचमुच तुमने मेरी नाक ऊँची कर दी। चलो, आज इसी बात पर तुम्हारा मुँह मीठा कराऊँगा। यह लो रूमाल, जाकर राधे के यहाँ से एक सेर मिठाई बँधवा लाओ।"

गंगा के मुँह से अपनी तारीफ सुनकर बुद्धू बहुत खुश हुआ और रूमाल लेकर बाहर चला गया।

राधे हलवाई की दूकान के पास ही एक मैदान पड़ता था। गाँव के बच्चे वहाँ तरह-तरह के खेल खेला करते थे। जिस समय बुद्धू वहाँ पहुँचा, मैदान में हल्ला मचा हुआ था। पास जाने पर मालूम हुआ कि लड़कों ने गंगा के लड़के मोहन को पकड़ रखा है और वह छूटकर भागना चाहता है।

"क्या हुआ? मोहन भाई को क्यों पकड़ रखा है तुम लोगों ने?" भीड़ को चीरकर बुद्धू आगे पहुँच गया।

"पकड़ें न तो क्या छोड़ दें? जब इसकी पदने की बारी आई, तो यह भागना चाहता है।"

बुद्धू ने देखा, मोहन रुआँसा हो गया था।

"अच्छा सुनो, मैं पदूँगा इसकी जगह, इसे छोड़ दो।"

"चलो, तुम ही पदो।" लड़कों ने मोहन को छोड़ दिया।

"मोहन भैया, यह रूमाल लो और राधे हलवाई के यहाँ से एक सेर मिठाई बँधवाकर घर ले जाओ। मैं पद कर अभी आता हूँ।" बुद्धू ने रूमाल मोहन को थमाया और खेल में जुट गया। थोड़ी देर में ही उसने अपनी बारी पूरी कर ली और दौड़ता हुआ घर पहुँच गया।

"अरे! आ गए तुम? बहुत जल्दी? मिठाई कहाँ है?" गंगा ने पूछा।

"मिठाई लेने तो मोहन भैया गए थे। मैं तो उनकी जगह खेल में पद रहा था। आए नहीं क्या अभी तक?"

इतना सुनना था कि गंगा फूट-फूटकर रोने लगा। रोते-रोते ही उसने अपने मन का पाप भी उगल दिया।

बुद्धू ने चुपचाप सबकुछ सुना और धीरे-धीरे बाहर निकल आया। दरवाजे पर खड़े होकर उसने कहा, "उस्ताद, आप भूल गए! जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह खुद गड्ढे में गिरता है। मेरी इसमें कोई गलती नहीं है उस्ताद, फिर भी मुझे क्षमा करिएगा, अब मेरा यहाँ रहना ठीक नहीं है।" इतना कहकर बुद्धू चला गया। गंगा के घर से आनेवाली चीखें तेज होती चली गईं।

चिड़िया

ठीक मेरे पीछेवाली सीट पर वह बैठा था। उम्र लगभग पचास, चेहरे पर खिचड़ी दाढ़ी, बदन पर एक कुर्ता और धोती। तीन आदमियों की सीट वह अकेले घेरे हुए था। अपनी बगल में वह अपनी बच्ची को लिटाए हुए था। बच्ची का शरीर एक गमछे से ढँका था और वह जाग रही थी। वह रह-रहकर बूढ़े से पिंजड़ा निकालने के लिए कह रही थी, जो सीट के नीचे रखा हुआ था और जिसमें हरे रंग की एक चिड़िया बंद थी।

बस शहर से निकलकर जंगल में प्रवेश कर चुकी थी। सड़क के दोनों ओर बाँस और खैर का घना जंगल था और बाईं ओर पेड़ों के बीच से इस क्षेत्र का प्रसिद्ध जल-प्रपात दिखाई पड़ रहा था। दृश्य का सुहानापन और बस का घर्र-घर्र करके चढ़ाई चढ़ना मुझे उस समय बेहद अच्छा लग रहा था। मैं सोच ही रहा था कि वातावरण में थोड़ी देर के लिए खो जाऊँ कि कंडक्टर की आवाज़ ने

मुझे चौंका दिया।

"जी हाँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। चिड़िया का टिकट भी लगेगा।"

मैंने पीछे घूमकर देखा। वह आदमी कंडक्टर को भीगी आँखों से देख रहा था।

"देख क्या रहे हो, निकालो नौ रुपए पंद्रह पैसे ।"

"कंडक्टर साहब, इतना तो इस चिड़िया का दाम भी नहीं है।" बूढ़े ने कहने की कोशिश की।

"तो क्या तुम समझते हो बस का किराया तुम्हारी चिड़िया की कीमत से कम लिया जाएगा ? नौ रुपए पंद्रह पैसे तुम नहीं दे सकते

तो बस से उतर जाओ।''

करीब-करीब निर्णय के स्वर में कहता हुआ वह आगे बढ़ गया और यात्रियों के टिकट चेक करने लगा। बस अब घनघोर जंगल में पहुँच गई थी। पेड़ों के अलावा कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था।

''निकालो पैसे!''

सहसा फिर कंडक्टर की कड़कदार आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं उस बूढ़े को लगभग भूल चला था। कंडक्टर के स्वर से चौंककर मैंने पुनः पीछे देखा। बूढ़ा फिर कातर आँखों से कंडक्टर को देख रहा था। बच्ची जाग रही थी। बूढ़े ने कंडक्टर को अपनी मजबूरी बताने की कोशिश की–

''कंडक्टर साहब, मेरे पास वाकई पैसा नहीं है। बच्ची बीमार है। आज ही इसके पैर का प्लास्टर कटा है। अस्पताल से हम निकले तो एक आदमी चिड़िया बेच रहा था। लड़की ने हठ किया तो एक चिड़िया मैंने खरीद ली। अब मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं हैं। किसी तरह घर पहुँच जाएँ, यही बहुत है।''

बूढ़े का स्वर काँप रहा था। उसकी दशा पर मुझे करुणा हो आई। मैंने कंडक्टर को समझाने की कोशिश की: ''अरे यार छोड़ो, एक चिड़िया ही तो ले जा रहा है बुड्ढा। वह भी अपनी बच्ची को फुसलाने के लिए। कोई जरूरी है कि चिड़िया का भी टिकिट बनाया जाए?''

इतना सुनना था कि कंडक्टर एकदम बिगड़ उठा। उसके नथुने फूल उठे और अपने नाटे कद को खींच-खींचकर बढ़ाते हुए

वह बकने लगा—

"आपको जब नहीं कुछ पता है तो क्यों बोलते हैं? पढ़-लिखकर भी आपको नहीं मालूम है कि हर जानदार चीज का टिकट लगता है बस में..."

मैंने सोचा, यह आदमी चालाक है। बंदरघुड़की दे रहा है। अगर दो रुपए इसे दे दिए जाएँ तो यह चुप हो जाएगा। मैंने दो का नोट उसकी ओर बढ़ाया : "लो इसे रखो और बुड्ढे को चलने दो।"

मगर कंडक्टर फिर भड़क गया : "आप मुझे रिश्वतखोर समझते हैं? मैं किसी कीमत पर बग़ैर टिकट इसे नहीं ले चलूँगा।"

"आखिर आपका नुकसान क्या होगा?" मेरा भी स्वर अब कड़कदार हुआ।

"नुकसान ? रास्ते में अगर आर. टी. ओ. मिल गया तो उसकी प्रार्थना एड़ी से शुरू करके खोपड़ी तक करूँगा तो भी वह नहीं मानेगा।"

उसका अकाट्य तर्क सुनकर मैं असमंजस में पड़ गया। चाहता तो खुद नौ रुपए पंद्रह पैसे दे सकता था, पर उस नन्हीं चिड़िया के लिए इतने रुपए खर्च करने में मुझे भी परेशानी हुई। अजीब-सा लगने लगा। अंत में मैंने कंडक्टर से अंतिम बात कही : "तब क्या होना चाहिए?"

"बस एक ही उपाय है। बूढ़ा टिकट ले या उतर जाए।"

इतना कहकर कंडक्टर बगलवाली खाली सीट पर बैठ गया

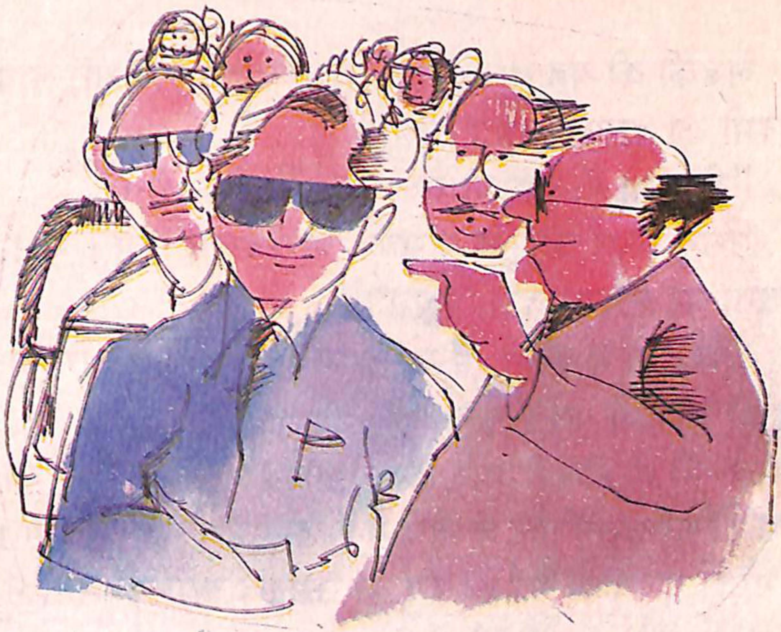

और पैसों का हिसाब करने लगा।

सभी लोग खामोश थे। जैसे देखना चाहते हों कि बूढ़े का क्या होता है? बूढ़ा कहीं से छिपा हुआ पैसा निकालकर टिकट लेता है या बस रुकवाकर उतर जाता है। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। सीट पर लेटी नन्हीं बीमार बालिका ने एक तीसरा तरीका बताया: ''बाबा, चिड़िया फेंक दो!''

उस नन्हीं-सी मरियल जान की वह आवाज़ लोगों ने सुनी। मैंने भी सुनी।

बच्ची ने दुबारा कहा, ''बाबा, चिड़िया फेंक दो! मैं नहीं खेलूँगी!''

लड़की की यह बात अच्छी लगनेवाली नहीं थी, लेकिन एक आदमी को शायद राहत मिली।

"ठीक तो है, यह भी एक अच्छा तरीका है।"

उसने कहा तो सब उसकी ओर देखने लगे। जैसे उसकी नीचता पर सबको तरस आया हो।

"फेंक दो न बाबा, मैं नहीं रोऊँगी। नहीं फेंकोगे तो जेल में बंद हो जाओगे, हाँ!"

बच्ची ने तीसरी बार कहा तो बूढ़े ने खिड़की से काँच हटा दिया। फिर उसने सीट के नीचे से पिंजड़ा भी निकाल लिया। पिंजड़े के भीतर फुदकती हुई हरे रंग की उस चिड़िया को सबों ने देखा।

"कितनी सुंदर चिड़िया है!"

लोगों ने कहा तो कंडक्टर ने भी कनखी से देख लिया।

"फेंक दूँ बेटी?" बूढ़े ने बच्ची की अंतिम राय जाननी चाही।

"हाँ, फेंक दो।"

बालिका ने कठोर स्वर में कहा और दोनों हाथों से अपनी दोनों आँखें कसकर बंद कर लीं।

तभी पता नहीं क्या हुआ कि झपटकर कंडक्टर ने बूढ़े के हाथ से पिंजड़ा छीन लिया—जो लगभग खिड़की तक पहुँच चुका था।

"इसको चादर में लपेटकर सीट के नीचे रख लो।" कंडक्टर ने कहा और ड्राइवर के पीछेवाली सीट पर जाकर बैठ गया।

सोने की अँगूठी

रामी ने जब आँख ऊपर की तो सामने लड़कों की एक पलटन दिखाई पड़ी। और फिर सहसा एक भयंकर आवाज आई : "क्यों री चांडालिन, तू नहीं बताएगी ?" सबसे आगे खड़ा किशन नाम का लड़का कह रहा था।

"क्या बताऊँ भइया ? क्या पूछ रहे हो ? मुझसे पूछ रहे हो ?" रामी विस्मित थी।

"वाह री बुढ़िया ! बड़ी छँटी हुई मालूम पड़ती है !"

"छँटी हुई ! कह लो, और कह लो, जो कुछ कहना हो सब कह डालो।" रामी फफक-फफककर रोने लगी।

लड़के खिलखिला उठे : "क्या नखरा है ! बुढ़ापे में यह अदा है, तो अपने जमाने में कैसी रही होगी ?"

"अरे यह नंबर एक की है, जानते नहीं।" किशन कह रहा था।

"बात क्या है ?" किसी दूसरे लड़के ने भीड़ में प्रवेश करते हुए पूछा ।

"आलस की अच्छी दवा है भीख माँगना । रामी का भी यही काम हो गया है ! खैर हमें इससे क्या मतलब, पर आज यह जब हमारे यहाँ भीख लेने के लिए गई तो हमारा मुन्ना दीदी की सोने की अँगूठी लिए दरवाज़े पर खेल रहा था । रामी ने उसे फुसलाकर अँगूठी ले ली और धीरे-से खिसक आई । वह तो कहो, मैं देख रहा था । अब माँगते हैं तो सत्रह कला दिखला रही है ।" किशन ने किसी बड़े-बूढ़े की तरह बात को साफ किया ।

"बिल्कुल झूठ ! बिल्कुल झूठ ! मुझे नाहक दोष मत लगाओ भैया, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ । भगवान जानते होंगे । मेरे कहने से क्या होता है । वह कोई दूसरी स्त्री रही होगी ।"

"क्या बकती है ! इसी तरह हाथ-पैर जोड़-जोड़कर सौ रुपए की अँगूठी निगल जाना चाहती है । सीधे से दे दे, नहीं तो अभी जेल भिजवाए देता हूँ ।"

"भिजवा दो, हम तो तुम्हीं के आसरे, हैं, चाहे जो करो ।"

"अच्छा रहने दे एहसानमंद बनने को । सीधे से अँगूठी दे दे, नहीं तो पुलिस को बुलवाकर अभी ठीक करा देता हूँ ।"

"क्या ठीक करवाओगे ? मरवा डालोगे और क्या करोगे ? मरवा दो । दुनिया के झंझट से छुट्टी तो मिलेगी ।"

तभी एक लड़के ने आगे बढ़ते हुए कहा, "उसमें क्या है किशन, तुम्हें अगर शंका है तो अंदर जाकर ढूँढ क्यों नहीं लेते । ले

आई होगी तो घर में ही रखेगी न··· उठ जा रामी, हट जा दरवाजे से।"

रामी का तो खून सूख गया। उसके घर की तलाशी ली जाएगी। मानो वह चोर है। फिर क्या विश्वास इन लड़कों का। उसका बहुत-सा टूटा-फूटा सामान इस झोंपड़ी में पड़ा है। ये लोग आँधी की तरह टूटकर सब नष्ट कर देंगे। तब वह क्या करेगी? फिर घर की तलाशी! वह चिल्ला उठी:

"यह कभी नहीं हो सकता। मेरे जीते जी कोई भी इस घर की तलाशी नहीं ले सकता।"

"देखा न, मैं क्या कहता था, है न नंबर एक की!" किशन ने सभी लड़कों की तरफ आँख नचाते हुए कहा।

"सच है, रस्सी जल गई पर ऐंठ बाकी है।" दूसरा बोला।

"जरूर ही रामी के पास अँगूठी है," लड़के चिल्ला उठे, "तभी तो वह घर की तलाशी नहीं करवाना चाहती।"

"घुस जाओ झोंपड़ी में और ढूँढ लाओ।" किशन ने पलटन को आदेश दिया।

"खबरदार! कोई भी लड़का घर के अंदर नहीं जा सकता।"

रामी खड़ी हो गई। लड़के उसकी घुसी-घुसी आँखों में क्रोध की मुद्रा को तैरते हुए देखकर हँस पड़े। रामी कहती गई, "जब तुम लोगों को मुझ पर भरोसा नहीं है तो मुझे तुम लोगों पर कोई भरोसा नहीं।"

"बड़ी धन्नासेठ है भाई, कै लाख का झोंपड़ा होगा?" किशन

ने मुस्कराते हुए कहा।

''बेटा ! मेरे लिए एक पैसा ही एक लाख से बढ़कर है। जितनी कीमत तुम्हारी अँगूठी की है, उतनी ही कीमत मेरी इस कुटिया की भी है।''

''घुसो जी, देखें यह क्या करती है।'' किशन ने ललकारा।

सभी लड़के टूट पड़े। रामी दरवाजे पर खड़ी थी। उसका दुर्बल शरीर छरहरे बदनवाले लड़कों से गुँथ गया। वह और तो कुछ नहीं कर सकती थी, हाँ जो भी अंदर जाने को होता, उसे अपने दुर्बल हाथों से बाहर की ओर धकेल देती। रामी की फटी-सी धोती और फट गई। बाल बिखर गए। साँसें ज़ोर-ज़ोर से चलने लगीं।

रास्ते पर देखनेवालों की भीड़ लगी थी। सभी हँस रहे थे। रामी पर चारों ओर से मानो प्रलय के ओले पड़ रहे थे। किंतु उसके जीते-जी भला उसके घर की तलाशी कैसे ली जा सकती थी ! यह उसका अपमान था।

सूरज डूब रहा था। आसमान लाल हो चला था और उसकी लालिमा से सारा प्रदेश लाल हो रहा था। सहसा रामी के झुर्रीदार गाल पर एक जोर का तमाचा पड़ा और वह भूमि पर गिर पड़ी। बीसों पाँव एक साथ उसकी देह से जा टकराए।

तभी किसी ने पीछे से डाँटा : ''यह क्या हो रहा है ?''

सभी पीछे हट गए। केवल किशन वहीं खड़ा था। डाँटनेवाले किशन के बाबू जी सेठ बृजभानुप्रसाद थे, जो मुन्ने को गोद में लिए अभी-अभी आकर खड़े हुए थे। मुन्ना अब भी सोने की अँगूठी

Acc. No. 78453
Date 22.3.92

अपने छोटे-छोटे हाथों में लिए खेल रहा था, जो गोधूलि की लाली में दमक रही थी और साथ ही झोंपड़ी के दरवाज़े पर पड़ा रामी का लहूलुहान शरीर भी।

• • •

Borrower's name (Block letters)	Signature & date

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Ab 32 A
00078452